भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-13, अंक-5 शनिवार, 26 अप्रैल' 90	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

अहो ! योगी जैसा साधु इस ब्रह्मांड में तो क्या अनंत ब्रह्मंडों में नहीं.....

अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना के प्रवर्तक व ज्योतिर्धर गुरुहरि योगीजी महाराज की शताब्दी मनाने का, भक्ति अदा करने का स्वर्ण अवसर नजदीक आ रहा है....1992 में सोखड़ा (गुजरात) में यह महोत्सव खूब भव्यता से मनाने का सर्व गुणातीत स्वरूपों ने निश्चित किया है....योगीजी महाराज ने दासत्व भक्ति से एक ऐसा अजोड़ आदर्श जीवन जीकर बताया कि आध्यात्मिक रास्ते पर चलने वाले हरेक प्राणीमात्र के लिए वह प्रेरणारूप मशाल आज भी अमरत्व को पाये हमारे सामाने अविरत जल रही है....जलती रहेगी.....करोड़ों वंदन हो दासत्व के उस मूर्ति मान स्वरूप को....।

'लाखों मुक्तों इनकी शताब्दी के इस महोत्सव में इकट्ठे होवें.....' इस भावना से हमें यह महोत्सव नहीं मनाना, बल्कि ब्र.स्व. योगीजी महाराज की जो एक इच्छा थी कि हम सभी प्रभु के धारक, चलते-फिरते साकार चैतन्य मंदिर बने.....उनकी इस इच्छा में स्वयं को याहोम करना–वही सच्ची शताब्दी !

महाराज की मूर्ति को अखंड धारण करते हुए भी रात को डेढ़ बजे महाराज के दर्शन की एक झलक पाने के लिए बरसात में खड़े रहकर मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने स्वामी सेवक भाव की अनोखी मिसाल रख दी। उनके बाद पू. जागास्वामी, पू. कृष्णजी अदा व पू. भगतजी महाराज ने इस ज्योति को और अधिक प्रज्वलित रूप दिया। गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने शिखरबद्ध मंदिरों की स्थापना की व योगीजी महाराज जैसा हीरा साथ में लाकर इस ज्योति की रोशनी को चरम सीमा पर ले आये। शास्त्रों में कहा जाता है कि शिष्यों का वर्तन देखकर गुरु की महिमा का सम्यक् दर्शन होता है.....गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा तैयार किये हुए प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी, प.पू. साहेब जैसे

ध्रुवतारकों को देखकर हमें ख्याल पड़ सकता है कि गुरुहरि योगीजी महाराज कैसी विरल विभूति होगी?

गुरुहरि योगीजी महाराज ने हमारी कल्पना के दायरे से बाहर का अप्रतिम गुरुभक्ति का बेनमून आदर्श रखा। योगीजी महाराज का जीवन यानि गुरुवाक्य.....ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें केवल एक ही बार आज्ञा करी थी कि **योगी तुम रसोई की सेवा संभालना। 40 साल तक कभी दुबारा शास्त्रीजी महाराज को रसोई की चिन्ता नहीं करनी पड़ी** !.....उनके जीवन में केवल दो ही शब्द थे–''महाराज' व 'शास्त्रीजी महाराज'! सबसे आखिरी दोपहर को दो बजे की गाड़ी से आने वाले हरिभक्तों को गरम फुलके खिलाने योगीजी महाराज एक पाँव पर खड़े रहते.....शरीर व मन दोनों ही गुरु की मर्जी में घिसा देने में जीवन की सार्थकता मानी थी उन्होंने....सेवा का मूर्तिमान स्वरूप..... !

जिस-जिस ने इस विभूति का विश्वास किया उस-उस को भगवान की मूर्ति बक्षिश देकर न्याल कर दिया.....करोड़ों माँ के प्रेम को भी फीका कर दे ऐसी अनुपम वात्सल्यधारा–निर्मल ब्रह्मनिर्झर अस्खलित बहाया। करुणा, वात्सल्य, साधुता, तप, त्याग, धर्म, ज्ञान, वैराग्य, पवित्रता, निर्दोषता, दया, क्षमा....आदि अनहद् गुणों का सम्राट होते हुए भी अपने अस्तित्वमात्र की झाँकी मात्र भी न आने दी, तभी तो शास्त्रीजी महाराज ने अपने इस लाडले के बारे में प्रमाणरूप कहा था–**'व्यासजी ग्रन्थों में साधुता के कोई गुण लिखने भूल गये हों वह अगर देखने हों तो योगी में देख लो।' अहो ! योगी जैसा साधु इस ब्रह्माण्ड में तो क्या अनंत ब्रह्माण्डों में नहीं.....'** कैसा अद्भुत संबंध किया होगा कि गुरु के मुँह से यह शब्द फिसले.....

ब्र.स्व. योगीजी महाराज ने एक नवीन क्रान्तिकारी युग की शुरुआत करी....बिगड़े हुए नवयुवान की प्रकृति का समूल रूपांतर करके उनके हाथ में माला देकर ब्रह्मविद्या के महारथी बनाये..... आज तक के इतिहास में बहनों के लिये एकांतिक धर्म सिद्ध करना नामुमकिन था, लेकिन ब्र. स्व. योगीजी महाराज ने त्यागी व गृही, बहनों व भाईयों, वृद्ध हो या जवान जो-जो भी भगवान भजने की इच्छा रखते थे उनके लिए एकांतिक धर्म सिद्ध करने की कल्याण योजना खुल्ली कर दी....

योगीजी महाराज ने अपना वारसा जिन्हें सोंपा उनके वे पनौते पुत्र प.पू. काकाजी की जयंती का दिन '12 जून' नजदीक आ रहा है तो 'भगवत् कृपा' के जून के अंक से हम गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा जीये गये आदर्श सहज जीवन के प्रसंग दिये जायेंगे....उन प्रसंगों का मनन चिन्तवन करेंगे तो एक ओर सच्ची सूझ प्रगट होगी, दूसरी ओर हमारा जीवन धन्य-धन्य कृतार्थ हो जायेगा....यह प्रसंग गुरुभक्ति अदा करने के पथप्रदर्शक बनकर हमें राह दिखायेंगे.....व हम सही अर्थ में 'सेवक' बन पायेंगे....

तो आइये, इस स्वर्ण अवसर को हम चूकें नहीं....दृढ़ संकल्प करें कि इन प्रसंगों से प्रेरणा लेकर गुरुहरि योगीजी महाराज का नाम रोशन करना ही जीवन का एकमात्र उद्यम अब हो ताकि गुणातीत स्वरूपों को हमारे लिए कम-से-कम परिश्रम करना पड़े। यही सही अर्थ में गुरुभक्ति अदा करी व 'योगी शताब्दी' मनाई कही जायेगी।

* * * *

'गुणातीत समाज के 'शाही फकीर' का प्राकट्य दिन'

हरेक के जीवन में कई प्रकार के मंगलकारी अद्‌भुत और अद्वितीय आनंद के प्रसंग आते हैं.....जगत में अलग प्रकार के व भक्त के जीवन में अलग प्रकार के.... ! शिष्यों के लिए उनके गुरु की जयंती से अधिक मंगलकारी दिन और कौन सा हो सकता है?

किसी के स्वभाव प्रकृति की ओर देखे बिना जिसने अपनी हस्ती मिटाकर सुहृद्‌भाव व आत्मीयता के सुवर्ण युग की स्थापना की....समग्र ब्रह्मसमाज के उस प्राणपुरुष प.पू. काकाजी के धरती पर प्रगट होने का शुभ दिन....12 जून !

ऐसा नहीं था कि गुरुहरि योगीजी महाराज से मिलने के बाद प.पू. काकाजी में प्रभु प्रगट हुए हों.....कल्याणकारी दिव्य गुण आये हों। गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने डॉ. नाथाभाई (प.पू. काकाजी के पिताश्री) को एक पत्र में लिखा कि–**'तुम्हारे घर दो अनादि महामुक्तों को महाराज ने भेजा है'।** एक कहावत प्रसिद्ध है–'पूत के पाँव पालने में ही नजर आने लगते हैं....' बचपन से प.पू. काकाजी का उठना-बैठना, बोलना-चलना, बातें करना उनके निराले व्यक्तित्व की झाँकी देता था....अत्यंत शूरवीर व महत्वाकांक्षी प्रकृति....11 वर्ष की आयु में उन्होंने अपने पिताश्री को कहा कि मुझे 'दिल्ली का गवर्नर' बनना है....और आखिर इस लोक के नहीं बल्कि अक्षरधाम के गवर्नर बने ही !

प.पू. काकाजी के बारे में लिखने लेखनी मौन हो जाती है....प.पू. काकाजी का रोम-रोम मानों गुरुहरि योगीजी महाराज की भक्ति अदा करने ही बना था। उन्होंने योगजी महाराज से अधिक प्रिय त्रिलोक की कोई वस्तु नहीं रखी, तो गुरुहरि योगीजी महाराज ने भी अपने इस लाडले वारिसदार को अपना सर्वस्व सौंप दिया.....स्वयं जैसा ही बना दिया ! प.पू. काकाजी गुरुहरि योगीजी महाराज के हृदय में ऐसा अनोखा स्थान ले चुके थे कि प.पू. काकाजी कहीं भी हों पर प.पू बापा उन्हें याद करते रहते थे–

एक बार प.पू बापा गोंडल मंदिर में विराजमान थे। एक भक्त 'दाजीबापु' सीढ़ियाँ चढ़कर बापा का दर्शन करने आ रहे थे। बापा उन्हें आते देखकर तुरंत बोले : 'आओ दादुभाई।' सारी सभा विचार में चली गयी। सभी को मन में एक ही संकल्प उठा कि दाजीपाबु आ रहे हैं और बापा ने दादुभाई का नाम कैसे लिया? इतने में दाजीबापु नजदीक आये। बापा दुबारा बोले–'दादुभाई आओ'। सारी सभा आश्चर्यचकित थी। बापा उस समय कोये के बीये (बीज) खा रहे थे। दाजीबापु को उसमें से प्रसाद देते हुए बोले–''लो दादुभाई, प्रसाद खाओ''। एक सेवक से रहा न गया और वह बोला–'बापा ! यह दादुभाई कहाँ हैं। यह तो दाजी बापु हैं।' बापा तो सहज में बोल उठे, **जो हृदय में है वही तो होंठो पर आ जाता है।'**

लेकिन यह प्रसन्नता, यह स्थान पू. काकाजी ने अपना सर्वस्व लुटाकर पायी थी....मन, बुद्धि, चित्त का चूरा-चूरा करके दो हाथ जोड़कर सरलता व निर्दोषबुद्धि बापा व इनके संबंध वालों में रखी थी। तो इसके फलस्वरूप बापा ने उन्हें 'निर्दोष बुद्धि का राजा' बना दिया।

बोचासण से गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ पू. काकाजी अटलादरा जा रहे थे। अटलादरा के नजदीक ही रास्ते में पू. भगतजी महाराज की

प्रासादीक देरी के पास बापा ने पू. काकाजी को कहा–'वहां हर्षदभाई व छगनभाई मिलेंगे तो उन्हें दंडवत करना.....' पू. काकाजी एकदम हाथ जोड़कर बोले, बापा ! आप कहो तो मैं कुत्तों को भी दंडवत करूँ। भगतजी महाराज ने ही तो हमारे लिए यह आदर्श रखा है। जबकि, हर्षदभाई और छगनभाई तो अक्षरधाम के मुक्तराज हैं, उनको दंडवत् करने में मुझे क्यों हिचक?

प.पू बापा यह सुनकर खूब राजी हो गये व प.पू. काकाजी को अनादि महामुक्त गोपालानंद स्वामी की प्रसादी की माला दी। जो हमें जँचता हो उसके साथ तो सभी रसरूप होंगे, पर जो निरंतर हमारा विरोध ही करता हो उसके साथ आत्मीयता का संबंध करना–वह कोई अलग कक्षा की बात है। परन्तु अपने गुरु पर कुर्बान हो जाने में ही प.पू. काकाजी ने जीवन की सार्थकता मानी थी। कैसा आत्मीय संबंध होगा? गुरुहरि योगीजी महाराज को पहले तो सब इतना ही मानते थे कि यह साधु अच्छे हैं, परन्तु सर्वप्रथम पू. काकाजी ने इस सत्य का ब्रह्मनाद डंके की चोट पर किया कि योगीजी महाराज कोई सामान्य साधु नहीं, बल्कि अक्षरधाम में जो महाराज की मूर्ति है–वही हुबहु स्वरूप योगीजी महाराज के रूप में आज धरती पर मूर्तिमान है। लोगों ने इस बात पर पू. काकाजी को 'पागल' कहकर हँसी उड़ाई, गालियाँ दी, परन्तु आज पू. काकाजी बापा को अन्तर से राजी करके उनका स्वरूप खुला न करते, तो शायद बापा एक सामान्य साधु की तरह रहकर अपने सभी गुणों व ऐश्वर्य को छिपाये रखते...

आणंद मंदिर में एक बार गुरुहरि योगीजी महाराज युवकों को कथा कर रहे थे....बापा की परावाणी बह रही थी–''**दादुभाई तो जनक और अंबरीष जैसे भक्त है। उसने स्वयं का सर्वस्व हमारे लिए मिटा दिया है। वह तो अनादि का है। वह तो महानिष्कामी है। आप सब उसका समागम कर लेना। जिससे उसके जैसे गुण तुम्हारे में आवें.....शास्त्रीजी महाराज राजी हो जायें**.....'' और...सर्व प्रथम प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी व प.पू. महंतस्वामिजी को पन्द्रह दिन के लिए बापा ने पू. काकाजी का समागम करने ताड़देव भेजा था। बापा को संपूर्ण विश्वास था कि अक्षरपुरुषोत्तम का रहस्यज्ञान अर्थात् धाम, धामी और मुक्तों की तत्त्वसहित पहचान शूरवीर पू. काकाजी ही करा सकते हैं।

इन प्रसंगों को देखकर स्पष्ट होता है कि योगीजी महाराज का सही अर्थ में सेवन पू. काकाजी ने करा था। प.पू. काकाजी का परिचय कराने की जरूरत नहीं पड़ती थी। कैसी भी परिस्थितियों में हमेशा निश्चिंत, निर्लेप प्रभु की मस्ती में ही लीन वह आनंदघन मूर्ति अपने आपका परिचय स्वयं थी.....प.पू. काकाजी ने सूर्य समान हरेक को अपनी करुणा वात्सल्य का प्रकाश दिया–उनके प्रकाश देने में फर्क नहीं था, पर हमारी पात्रता व भेददृष्टि के कारण हम वह प्रकाश झेल नहीं पाते थे। उनको तो बस एक ही नजर थी– 'तुम शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज के अल्प संबंध वाले हो, बस तुम्हारा सब दिव्य....! अति समर्थ होते हुए भी केवल एक सामान्य सेवक.....'शाही फकीर'.....किसी से कोई अपेक्षा नहीं, किसी की उपेक्षा भी नहीं....बस संबंधवालों की महिमा समझकर उनके लिये स्वयं को याहोम करना–इसी में भक्ति मानी थी और हम सबसे वह यही चाहना रखते थे–आज भी रखते हैं !

अपने गुरु की सच्ची जयंती मनाने का अर्थ है अपने गुरु को जँचती हुई ही पल-पल की हमारी क्रिया हो ! पू. काकाजी का सनातन सूत्र हम सभी जानते हैं—उन्हें जँचता था 'मैत्री-सुहृदभाव'। अर्थात किसी का गुण दोष देखे बिना सभी को जंचाकर उनमें ओत-प्रोत हो जाना। उनका यह सुत्र सिर्फ दूसरों को कहने के लिए नहीं था। आज हरेक जानता है कि गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने एक बार केवल कहा था—'कान्ति और तुम भाई-भाई बनकर रहना'। तब से जीवन की आखिरी पल तक कैसे भी संजोगों के खूब ज्वार-भाटे आने पर वह मैत्री निभाये रखी और आज गुणातीत समाज के हर सभ्य के लिए उन दोनों का संबंध आदर्शरूप है। हमें बस वही करने लग पड़ना है। बाकी तो जिस समर्थ पुरुष ने हमारी जिम्मेदारी ली है वह अधूरा तो छोड़ेंगे नहीं.....पर हमें केवल सुरुचि रखकर कूदना है। इस रास्ते चलने का बल भी वही देने वाले हैं। तो अब सुहृदभाव, सरलता व सेवकभाव स्वयं में प्रगटाने तीन चीजों की दृढ़ गाँठ बाँधे.....

1. कैसे भी संजोगों में हम किसी को सूचन ना करें।
2. हरेक के साथ रसबस होवें।
3. मन के दोषों की ओर देखे बिना सुरचि रखकर खाली प्रार्थना करा करनी है।

अंत में, हे काकाजी ! आपका संबंध होते हुए भी हम कभी सहज में खिल जाते हैं कभी मुरझा जाते हैं—इस अवस्था में हमें नहीं रहना। आप बार-बार कहते थे कि '**आप सब अखंड अक्षरधाम में ही हो**' वह बात अब तो विश्वास से मानने लग पड़े...यही इस पवित्र दिन पर प्रार्थना !

* * * *

मनन करें.....निदिध्यासन करें.....

हम पर सत्पुरुष की दृष्टि पड़ी कब कही जाये?
सत्पुरुष हमें सहज ही याद करा करें
तब जानना कि अब हम सत्पुरुष की नजर में आये हैं।
परन्तु,
भगवान व भगवान के भक्त की महिमा हो
तब वह होता है।

—ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज

* * * *

ब्रह्मप्रवाह

....हमारा सर्वस्व प.पू.प्र.ब्र.स्व.पू. स्वामिजी (योगीजी महाराज) ही है और दिव्यभाव से संगठन भाव रखकर वर्तने वाले पर अंतर की प्रसन्नता बिना कहे मिल ही जाती है.....

.....सुहृद्भाव रहेगा तो ही ब्रह्मरूप हो सकेंगे और तभी देह होते हुए शांति, सुख और आनंद पा सकेंगे। वह नींव है—ऐसा प.पू. स्वामिजी ने कपोलवाड़ी में कई बार सभा में कहा है। तो, पुष्टि पुरुषोत्तम की है। वह बात गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज

ने प.पू. मगनबापा अफ्रीका वाले पर श्री रसिकभाई सेक्रेटरी द्वारा पत्र–संवत् 2005 के आषाढ़ में– लिखकर भेजी थी यह सब जानते हैं....

तो, प्रगट स्वरूप को सर्वोपरि, दिव्य मानकर अनन्यभाव से उनका सेवन कर लेना और संबंध वाले सब में निर्दोषभाव हमेशा रहे ऐसी इस जयंती के अवसर पर गुरुचरण में सबको प्रार्थना करनी है। स्वभाव टालकर सत्संग करने वाले पर गुरुजी की तत्काल प्रसन्नता होती ही है और उसके जीवन में परिवर्तन आते देह होते हुए सदा सुखी हो जाता है। इसीलिए प्रथम प्रकरण की पहली और चौथे प्रकरण की 140 (की बात)–हमारा जीवन मंत्र है जो पू. स्वामीजी को अत्यंत प्रिय है।

तो, उनकी अनुवृत्ति अनुसार वर्त लेने का बल मिले इस हेतु सब प्रार्थना करना।

'मनमानी छोड़ दे वह जीवनमुक्त और (संत) चाहे (हमारा) कितना ही बदल डाले तो भी वह परेशानी महसूस न करें–तो बड़े प्रसन्न हो जायें और वही सच में जीव जोड़ा माना जाये। इसलिए संत के वचन से, निर्दोषबुद्धि के कायदे से, भगवान की बुद्धि से, निर्मानी रूप से सेवा करने वाले पर बिना प्रयत्न (सहज ही) प्रीति हो जाती है। बड़ों के प्रसंग से सभी वह दृढ़ कर लें–हमारे सबके जीवनप्राण पू. योगी बापा के चरणों में लाखों वंदन हो।

23-4-'67

प.पू. काकाजी महाराज'

* * * *

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	1.6.90	शुक्रवार	नवमी
2.	दि.	2.6.90	शनिवार	भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
3.	दि.	4.6.90	सोमवार	एकादशी, व्रत
4.	दि.	12.6.90	मंगलवार	ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महराज की जयंती
5.	दि.	19.6.90	मंगलवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at **R.P. PRINTERS,** Shahadra, Delhi-110032